

Padma Shri



DR. ANIL KUMAR RAJVANSHI

Dr. Anil Kumar Rajvanshi is the Director of Nimbkar Agricultural Research Institute (NARI), Phaltan, Maharashtra. Dr. Rajvanshi's rural development work for the last three decades has spanned a whole spectrum of areas affecting the lives of rural population viz. renewable energy-based cooking and lighting; power generation from agricultural residues; renewable fuel production from agriculture; electric cycle rickshaws; water purification and effluent treatment through the use of renewable energy.

2. Born on 1st September, 1950 and raised in Lucknow, Dr. Rajvanshi went to the United States in 1975 to pursue higher studies at the University of Florida following his bachelor and master's degrees in Mechanical Engineering from I.I.T. Kanpur. After receiving his Ph.D. in 1979, he taught at the University of Florida for two and half years and then he came back to India in 1981 to apply his training for developing rural India.

3. Dr. Rajvanshi is a grassroot scientists and under his leadership NARI has many first to its credit. NARI is the principal author (1996) of national policy on energy self-sufficient Taluka which was managed by Ministry of New & Renewable Energy (MNRE). He developed a unique program of improving cooking and lighting technology for rural areas which led him to pioneer the concept of rural restaurants in 2012. This probably led to the setting up of Amma's kitchen in Tamil Nadu and Shiva Bhojan in Maharashtra. In early 1990s, his group at NARI set up the world's largest program on production of ethanol from sweet sorghum. This led to NARI being the only Institute in India to be made a member of European Economic Community (EEC) sweet sorghum consortium. NARI developed the first non-spiny hybrid safflower and various varieties. In late 1990s he pioneered the concept of using ethanol as cooking and lighting fuel for rural areas and his group pioneered the development of loose biomass gasification system in late 1990s. His group also pioneered the production of potable water via rainwater harvesting using low cost unelectrified solar-based water purifier. And his efforts have shown how a small rural S&T Institute working on shoestring budget can pioneer technologies for rural India.

4. Dr. Rajvanshi is the recipient of numerous national and international awards. In 1998, he became the second Indian to be inducted in the U.S. based Solar Hall of Fame. In 2001, he received the Jamnalal Bajaj Award for the use of science and technology for rural areas. His efforts led to NARI getting FICCI Platinum Jubilee Award in 2002. His work on ethanol lanstove was given the 2009 Globe Forum Award for sustainability research in Stockholm. In 2014, he became the first Indian to receive the Distinguished Alumnus Award of the University of Florida, USA. He has delivered prestigious endowed lectures both in India and abroad and has more than 250 publications in national and international journals, seven patents, five books, and various chapters in books.

पद्म श्री



डॉ. अनिल कुमार राजवंशी

डॉ. अनिल कुमार राजवंशी, निंबकर कृषि अनुसंधान संस्थान (एनएआरआई), फलटन, महाराष्ट्र के निदेशक हैं। पिछले तीन दशकों में डॉ राजवंशी के ग्रामीण विकास कार्य से, ग्रामीण आबादी के जीवन को प्रभावित करने वाले सभी क्षेत्र लाभान्वित हुए हैं: यथा नवीकरणीय ऊर्जा से भोजन बनाना और प्रकाश व्यवस्था; कृषि अवशेषों से बिजली उत्पादन; कृषि से नवीकरणीय ईंधन उत्पादन; इलेक्ट्रिक साइकिल रिक्शा; नवीकरणीय ऊर्जा के उपयोग से जल शोधन और अपशिष्ट उपचार।

2. 1 सितंबर, 1950 को जन्मे और लखनऊ में पले-बढ़े, डॉ राजवंशी आई.आई.टी, कानपुर से मैकेनिकल इंजीनियरिंग में स्नातक और स्नातकोत्तर उपाधि प्राप्त करने के बाद फ्लोरिडा विश्वविद्यालय में उच्च अध्ययन करने के लिए 1975 में संयुक्त राज्य अमेरिका गए। 1979 में पीएच.डी. करने के बाद, उन्होंने फ्लोरिडा विश्वविद्यालय में ढाई साल तक पढ़ाया और फिर वे अपने प्रशिक्षण का उपयोग ग्रामीण भारत के विकास के लिए करने हेतु 1981 में भारत वापस आ गए।

3. डॉ. राजवंशी एक जमीन से जुड़े हुए वैज्ञानिक हैं और उनके नेतृत्व में एनएआरआई ने कई अग्रणी कार्य किए हैं। एनएआरआई नवीन और नवीकरणीय ऊर्जा मंत्रालय (एमएनआरई) द्वारा प्रबंधित ऊर्जा आत्मनिर्भर तालुका संबंधी राष्ट्रीय नीति का प्रमुख प्रणेता (1996) है। उन्होंने ग्रामीण क्षेत्रों के लिए खाना पकाने और प्रकाश व्यवस्था में सुधार का एक अनूठा कार्यक्रम तैयार किया, जिसमें उन्होंने 2012 में ग्रामीण रेस्तरां की अवधारणा प्रस्तुत की। संभवतः यही तमिलनाडु में अम्मा की रसोई और महाराष्ट्र में शिव भोजन की स्थापना का आधार बना। 1990 के दशक की शुरुआत में, एनएआरआई में उनके समूह ने मीठे ज्वार से इथेनॉल के उत्पादन पर दुनिया का सबसे बड़ा कार्यक्रम शुरू किया। इसके कारण एनएआरआई यूरोपीय आर्थिक समुदाय (ईईसी) स्वीट सोरघम कंसोर्टियम का सदस्य बनने वाला भारत का एकमात्र संस्थान बन गया। एनएआरआई ने पहली गैर-कांटेदार संकर सूर्यमुखी और इसकी विभिन्न किस्मों का विकास किया। 1990 के दशक के अंत में, उन्होंने ग्रामीण क्षेत्रों के लिए खाना पकाने और प्रकाश ईंधन के रूप में इथेनॉल का उपयोग करने की अवधारणा प्रस्तुत की और उनके समूह ने 1990 के दशक के अंत में लूज बायोमास गैसीकरण प्रणाली का विकास किया। उनके समूह ने कम लागत वाले गैर-विद्युतीकृत सौर-आधारित जल शोधक का उपयोग करके वर्षा जल संचयन के माध्यम से पेय जल बनाया। उनके प्रयासों ने दिखाया है कि कैसे कम बजट पर काम करने वाला एक छोटा ग्रामीण विज्ञान और प्रौद्योगिकी संस्थान, ग्रामीण भारत के लिए नई प्रौद्योगिकियां तैयार कर सकता है।

4. डॉ. राजवंशी को कई राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय पुरस्कार प्राप्त हुए हैं। 1998 में, वह अमेरिका स्थित सोलर हॉल ऑफ फेम में शामिल होने वाले दूसरे भारतीय बने। 2001 में, उन्हें ग्रामीण क्षेत्रों के लिए विज्ञान और प्रौद्योगिकी के उपयोग के लिए जमनालाल बजाज पुरस्कार प्राप्त हुआ। उनके प्रयासों से एनएआरआई को 2002 में फिक्की प्लेटिनम जुबली पुरस्कार मिला। इथेनॉल लैनस्टोव पर उनके काम को स्टॉकहोम में सततता अनुसंधान के लिए 2009 का ग्लोब फोरम अवार्ड दिया गया। 2014 में, वह फ्लोरिडा विश्वविद्यालय, संयुक्त राज्य अमेरिका के डिस्टिंग्विश्ड एलुमिनस अवार्ड प्राप्त करने वाले पहले भारतीय बने। उन्होंने भारत और विदेश दोनों में प्रतिष्ठित व्याख्यान दिए हैं और राष्ट्रीय और अंतराष्ट्रीय पत्रिकाओं में उनके 250 से अधिक लेख प्रकाशित हुए हैं। उनके पास सात पेटेंट हैं, उन्होंने पांच पुस्तकें और विभिन्न पुस्तकों में अध्याय लिखे हैं।